भूमिका पाद्य उपन्यास:　　　　　　　　　　　　जनाथमिश्र

"चैतन्यमाला"

"शारदा - लिपि

डा० शुभदर्शनराम त्रिपाठी

का

एक व्यवस्थित

शिक्षक"

"शोध - कर्ता"

"डॉ० त्रिलोकीनाथ गंजू

४२ - शहर पार्टी ब्रिज

कश्मीर

"प्रस्तुत पाण्डुलिपि का मुद्रण -

एवं प्रकाशन लेखक के अधीन -

सुरक्षित है"

निश्चित पुरा संरक्षण

Xeroxed and supplied to participants [illegible] Advanced Workshop on [illegible] & Palaeography organised [illegible] National Mission for Manuscripts in collaboration [illegible] Oriental Research Institute, Tirupati [illegible] University and Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha (Deemed University), Tirupati from 8th January to 15th [illegible] 20[illegible]

भूमिका

(भूमिका)

(शारदा - लिपि के उद्भव और विकास - के परिप्रेक्ष्य में अभी तक हम भारतियों का दृष्टिकोण पाश्चात्य - विद्वानों द्वारा प्रस्थापित मान्यता के आगे अन्वेषण - दिशा में अग्रसर नहीं बढ़ पाया है, क्योंकि हम और शासन और स्वयंसेवी - संस्थाएँ एक लंबे समय तक उदासीनता में निष्क्रिय बने रहे, अतः जो भी उपलब्ध है, अतीत का है। नया क्षेत्रीय - खोज अभी भी नगण्य है।)

(इतिहासकार कल्हण अपनी राजतरङ्गिणी में प्राचीनतम शारदा-लिपि के इतिहास का साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए - कहते हैं :-)

(क) (प्रकाशिता शारदा पदैः)

(ख) (प्रतिष्ठा वस्तु शासनैः)

(ग) (रेखैः हंकार वर्जिता कारितैः)

इन अभिलेख-शास्त्रों की क्या नियति हुई, इसका
ऐतिहासिक-शास्त्र कश्मीर के परवर्ती इतिहा-
सकार जोनराज अपनी राजतरंगिणी- में,
ईसी 1435 के युग में, प्रस्तुत कर चुके हैं:—

"ध्वंसोऽथ यवनैः कृतः"

लङ्का के महावंश-इतिहास के
आधार पर तथा राजतरङ्गिणी-शास्त्र के आधार
पर मौर्य सम्राट अशोक 269 ई०पू० 300 माध्यमिक
भिक्षुओं को लेकर कश्मीर में बौद्ध-धर्म का
प्रचार करते आए। इसका प्रत्यक्ष तथा परोक्ष
विवरण विशालकाय गिलगित मैनस्क्रिप्ट्स में
विशद रूप से मिलता है। ईसा की चौथी शती
के बौद्ध-दार्शनिक सिद्धान्त के अभिधर्म-कोश
जैसे महाग्रन्थ-ग्रन्थ के लेखक आचार्य वसुबन्धु
ने अपने इस प्रामाणिक ग्रन्थ में माध्यमिक,
सौत्रान्तिक, योगाचार और वैभाषिक इन —

चारों ही बौद्ध संप्रदायों के चिन्तन पर महा-
भाष्य लिखा। आचार्य अपने अभिधर्म कोश में
उद्घोष करते हुए कहते हैं :—

"कश्मीर में वैभाषिक नीति सिद्धः प्रायो मयायं
लिखितोऽभिधर्मः"

यहाँ स्वीकृत तथ्य है कि शारदा लिपि के बिना
उन के पास और कोई भी लिपि नहीं थी।
चीन देश के दो धार्मिक यात्रियों ने, अर्थात्, बौद्ध
धर्म के अन्वेषक, औ-कौं-आङ् और महान्
बौद्धभिक्षु युवान च्वाङ् ने अपने यात्रा-वर्णन में
यहाँ की लिपि के गहन अध्ययन और पठन-पाठन
की प्रक्रिया को स्वीकार किया है। बौद्धभिक्षु
ह्यूनत्सांग श्रीनगर (कश्मीर) के जैनेन्द्र विहा-
र में रहकर बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन, चिन्तन
और लिपिन्तर तथा चीनी भाषा में अनुवाद भी
करते रहे। निश्चय ही इन ग्रन्थों में

संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश का एक
अपार साहित्य रहा होगा।
लक्षणों के आधार पर कश्मीर के
शैव दर्शन का आधारभूत ग्रंथ "शिवसूत्र" भी
आचार्य वसुगुप्त की कठिन तपस्या, सतत-
अन्वेषणा तथा गहन-खोज के उपरान्त ही
महादेव घाटी के स्थल पर शंकर-उपल
पर अंकित थे। जिस पर 87 सूत्र उकारे हुए थे। यह
भी शारदा लिपि में ही लिखे हुए थे।
वस्तुत साक्ष्य निश्चय ही एक
चौंकाने वाला तथ्य है कि जापान के होरयुजी
विहार में "उष्णीष-विजय धारिणी" का एक
ग्रंथ है। यह ताड़पत्र पर लिखा हुआ ग्रंथ है।
इस ताड़-ग्रंथ के अन्त पर सम्पूर्ण शारदा-
वर्णमाला अंकित है। इसका ऐतिहासिक-
काल-खण्ड ईसा की पाँचवीं शताब्दी आंका-

जाता है। इसका तात्पर्य यह निकल आता है कि
ईसा की पाँचवीं शती में कश्मीर की शारदा-लिपि का
भौगोलिक विस्तार पूर्वी-प्रशान्त सागर के तटों के
आगे फैल चुका था। मास्को में आयोजित कुषाण-
साम्राज्य की संगोष्ठी में डॉ० गफूरोव ने अपने
शोध-पत्र में इस बात का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत
किया है कि काबुल रेगिस्तान के आसपास शारदा
लिपि के चिरप्राचीन साक्ष्य मिले हैं।

ईसा की दसवीं शती के आरम्भ में
मुसलिम ग्रन्थ के रचनाकार अलबेरूनी ने
भी अपने इतिहास में कश्मीर की लिपि शारदा
का उल्लेख "सिद्ध मातृका" के नामकरण से किया
है।

प्राचीन कश्मीर के शारदा-लिपि
के शिलालेख अभी तक उपलब्ध १४ पंजीकृत
हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त शारदा लिपि में

अङ्कित राजकीय प्राचीन-मुद्राओं का अपार
कोष शोध के विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित है। आश्चर्य
तो यह है कि चीन देश के ताङ्ग-साम्राज्य के
इतिहास में भी कश्मीर की लिपि शारदा का
उल्लेख आया है।

उत्तर भारत में शारदा लिपि का
प्रचार, प्रसार और लिखित अभिव्यक्ति का
एकाकी माध्यम ईसा की सोलहवीं शती तक
पंजाब, हरियाना, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू
से लेकर रामबन-कश्तवार तक फैल चुका-
था। इस के उपरान्त उत्तरोत्तर युगों के परिष्कार
और संस्कार के फलस्वरूप शारदा लिपि ने
पंजाब की गुरुमुखी, टाकरी, डोगरी, राम-
बनी आदि अनेक लिपियों को जन्म दिया।
यह कहना असंगत नहीं होगा कि मौलिक
शारदा लिपि की छाप अभी भी विद्यमान है।

भारत के पूर्व में शारदा लिपि का भौगोलिक
विस्तार तथा विकास तिब्बत के दुर्गम मार्गों
के कोस-कोस में रम चुका है। इस प्रकार शारदा लिपि
ने एक और अपने अनुरूप लिपि को जन्म दिया,
जो आज तिब्बती-लिपि कहलाती है। इस का
साक्ष्य तिब्बत के महान् आचार्य लामा तारा-
नाथ ने अपने इतिहास में उद्धृत किया है। इस समय
शारदा लिपि में लिखे हुए पाण्डुलिपियों की
संख्या एक लाख से भी अधिक है।

निवेदक:

"त्रिलोकीनाथ गंजू
हब्बा-कदल श्रीनगर
कश्मीर - 190001"

गुरु पूर्णिमा,
सप्तर्षि शुभसंवत् 5083
– जुलाई 2006.

𑇄 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆓𑆟𑆼𑆯𑆳𑆪 𑆤𑆩𑆂
ॐ श्रीगणेशाय नमः

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆑𑆼 𑆱𑇀𑆮𑆫 :
(शारदा लिपि के स्वर)

𑆃 (अ) 𑆄 (आ) 𑆅 (इ) 𑆆 (ई) 𑆇 (उ) 𑆈 (ऊ) 𑆉 (ऋ) 𑆊 (ॠ) 𑆋 (ऌ) 𑆌 (ॡ)

𑆍 (ए) 𑆎 (ऐ) 𑆏 (ओ) 𑆐 (औ) 𑆃𑆁 (अं) 𑆃𑆂 (अः)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆑𑆼 𑆮𑇀𑆪𑆚𑇀𑆘𑆤 :
(शारदा लिपि के व्यञ्जन)

𑆑 (क) 𑆒 (ख) 𑆓 (ग) 𑆔 (घ) 𑆕 (ङ)

𑆖 (च) 𑆗 (छ) 𑆘 (ज) 𑆙 (झ) 𑆚 (ञ) (𑆚 > ञा)

𑆛 (ट) 𑆜 (ठ) 𑆝 (ड) 𑆞 (ढ) 𑆟 (ण)

𑆠 (त) 𑆡 (थ) 𑆢 (द) 𑆣 (ध) 𑆤 (न)

𑆥 (प) 𑆦 (फ) 𑆧 (ब) 𑆨 (भ) 𑆩 (म)

𑆪 (य) 𑆫 (र) 𑆬 (ल) 𑆮 (व)

𑆯 𑆰 (ष) 𑆱 (स) 𑆲 (ह)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆑𑆼 𑆱𑆁𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠 𑆃𑆑𑇀𑆰𑆫 :
(शारदा लिपि के संयुक्त अक्षर)

𑆑𑇀𑆰 (क्ष) 𑆠𑇀𑆫 (त्र) 𑆘𑇀𑆚 (ज्ञ) (𑆘𑇀𑆚 > ज्ञा)

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆢𑆵𑆫𑇀𑆓 / 𑆘𑇀𑆚𑆳 / (ज्ञा)
शारदा लिपि के दीर्घ / ज्ञा / (ज्ञा)

"शारदा लिपि की स्वर-प्रक्रिया :—"

/अ/, (मात्रा, हलन्त हीन) (क, च, त, प, भ, म, य)

/आ/, (मात्रा ा) (का, चा, ता, पा, भा, मा, या)

/इ/, (मात्रा ि) (कि, चि, ति, पि, भि, मि, यि)

/ई/, (मात्रा ी) (की, ची, ती, पी, भी, मी, यी)

/उ/, (मात्रा ु) (कु, चु, तु, पु, भु, मु, यु)

/ऊ/ या /ऊ/ मात्रा ू) (कू, चू, तू, पू, भू, मू, यू)

विशेष सूचना :— शारदा लिपि के पाण्डुलिपियों में — /उ, ऊ/ मात्राओं के वैकल्पिक प्रयोगों का प्रचलन मिलता है। इसका स्पष्टीकरण पृष्ठ-संख्या-6-8 में स्पष्ट हुआ है।

/[illegible]/, ([illegible] > [illegible]) [illegible]
(ऊ) (मात्रा)
(कू, चू, तू, पू, ढू, मू, यू)

/[illegible]/, ([illegible] > [illegible]) [illegible]
(ऋ) (मात्रा)

/[illegible]/, ([illegible] > –) [illegible]
(ए) (मात्रा)

/[illegible]/, ([illegible] > =) [illegible]
(ऐ) (मात्रा)

/[illegible]/, ([illegible] > [illegible]) [illegible]
(मात्रा)
(ओ)

/[illegible]/
(द्वितीय) /[illegible]/, ([illegible] > [illegible]) [illegible]
(औ) (मात्रा)

/[illegible]/, ([illegible] > > [illegible]
(अं) (मात्रा)

/[illegible]/, ([illegible] > > [illegible]
(अः) (मात्रा)

[illegible] :—
(संयुक्ता लिपि में मात्रा-प्रयोग)

/[illegible]/ (का)

ਕ ਕਾ ਕਿ ਕੀ ਕੁ ਕੂ ਕ੍ਰ ਕ੍ਰਿ ਕੇ —
(क) (का) (कि) (की) (कु) (कू) (कृ) (कॄ) (के)

ਕੈ ਕੋ ਕੌ ਕੰ ਕਃ ;
(कै) (को) (कौ) (कं) (कः)

/ਜ/ (ज)

ਜ ਜਾ ਜਿ ਜੀ ਜੁ ਜੂ ਜੇ ਜੈ ਜੋ —
(ज) (जा) (जि) (जी) (जु) (जू) (जे) (जै) (जो)

ਜੌ ਜੰ ਜਃ ; (ਜ > ਜ਼)
(जौ) (जं) (जः)

/ਤ/ (त)

ਤ ਤਾ ਤਿ ਤੀ ਤੁ (ਤੁ) ਤੂ ਤੇ ਤੈ ਤੋ —
(त) (ता) (ति) (ती) (तु) (तू) तै तो

ਤੌ ਤੰ ਤਃ ; । (ਤ > ਟ)
तौ तं तः

/ਧ/ (ध)

ਧ ਧਾ ਧਿ ਧੀ ਧੁ ਧੂ ਧੇ ਧੈ ਧੋ —
(ध) (धा) (धि) (धी) (धु) (धू) (धे) (धै) (धो)

ਧੌ ਧੰ ਧਃ ; (ਧ > ਢ)
(धौ) (धं) (धः)

/ਪ/ (प)

ਪ ਪਾ ਪਿ ਪੀ ਪੁ ਪੂ ਪੇ ਪੈ ਪੋ
(प) (पा) (पि) (पी) (पु) (पू) (पे) (पै) (पो)

ਪੌ ਪੰ ਪਃ ; (ਪ > ਫ)
(पौ) (पं) (पः)

/ਮ/ (म)

ਮ ਮਾ ਮਿ ਮੀ ਮੁ ਮੂ ਮੇ ਮੈ ਮੋ ਮੌ

ਮੰ ਮਃ ; (ਮ > ਮ਼)

(शारदा लिपि में मात्रा एवं वर्ण की संलग्नता का स्वरूप)

4

/अ/ (×)

(अगाद) (अमय) (अयत) (अमल)
(वन) (तरल) (सरल) (गरल)
(पवत) (कमल) (वदन) (जनक)
(कलरव) (शलभ) (जलद) (नभ)
(अभाव) (अनाथ) (अनन्त) (अल)

/आ/ (ा)

(आलय) (कारावास) (जलधारा)
(आलवाल) (चालक) (पालक)
(गायक) (नायक) (सहायक)
(कारक) (तारक) (धारक)
(आशा) (आचार) (आकाश) (धारक)

/इ/ (ि)

(किन्नर) (किरात) (किसलय)
(गिरिजा) (हरि) (दिन) (भिन्न)
(चिराग) (तिलक) (इन्द्राणी)
(चिदाकाश) (पिवति) (हरित)
(इन्दु) (इच्छित) (इडा) (इति)

/ई/ (ी)

(ईश्वर) (कीटक) (ईशान) (धीर)
(ईक्षे) (जीर) (जीवन) (नदी)
(तीर) (दीक्षा) (धीवर) (नील)
(पीत) (नीरज) (पीवर) (पीयूष)

/उ/ (ु)

(तुषार) (उन्मेष) (उपदेश)
(उग्र) (उपाय) (उदय) (उचर)
(कुलाल) (कुसुम) (तुषार) (भुवनेश)
(मुनि) (युग) (रुचि) (शुक) (श्रुत)

(उ) ह्रस्व उ एवं मात्रा प्रयोग

1. (उ) उदय, उद्यम, उपाय
2. (उ) उभार, उषा, उल्लास
3. (उ) कपि कद्दू - कद्दू
4. (उ) तुरा तुला तुप
5. (उ) ससुर मसुल सुख
6. (उ) खुर, गुल्म, सुर
7. (उ) रूत रूका, रूढ़

(ऊ) दीर्घ ऊ एवं मात्रा प्रयोग

1. (ऊ) ऊखल, ऊर्मि, ऊन
2. (ऊ) कूप कूल, कूदान
3. (ऊ) कूप कूल कूम
4. (ऊ) कूळ, कूरा कूट
5. (ऊ) धूर, धूल, धूम
6. ऊ खूर, धूर, जूम
7. ऊ रू रूपताभा
रूलता, रूठना

महात्मा

"८ (ो) मात्रा का प्रयोग"

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य

को > खो > गो > घो > ङो > चो > छो > जो > झो > ञो > टो > ठो > डो > ढो > णो > तो > थो > दो > धो > नो > पो > फो > बो > भो > मो > यो

पाठलिपि के 5 पृष्ठ के पहले इसे प्रस्तुत करायें

𑆠𑆶𑆬𑇀𑆬𑆳 (तुल्ला) 𑆑𑆶𑆬 (कुल) 𑆥𑆶𑆬𑆑 (पुलक) 𑆩𑆶𑆒 (मुख)

𑆓𑆶𑆓𑇀𑆓𑆶𑆬 (गुग्गुल) 𑆇𑆥𑆩𑆳𑆤 (उपमान) 𑆇𑆥𑆳𑆱𑆤𑆳 (उपासना)

/ऊ/

𑆈𑆰𑇀𑆩 (ऊष्म) 𑆈𑆞 (ऊढ) 𑆈𑆫𑇀𑆩𑆴 (ऊर्मि)

𑆩𑆷𑆞 (मूढ) 𑆖𑆷𑆝𑆳𑆩𑆟𑆴 (चूडामणि) 𑆠𑆷𑆬𑆤 (तूलन)

𑆣𑆷𑆩𑆴𑆬 (धूमिल) 𑆥𑆷𑆘𑆳 (पूजा) 𑆨𑆷𑆰𑆴𑆠 (भूषित)

विशेष-सूचना:—

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆥𑆳𑆟𑇀𑆝𑆶𑆬𑆴𑆥𑆴-𑆓𑇀𑆫𑆤𑇀𑆡𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆩𑆳𑆣𑇀𑆪𑆩 𑆑𑆼
(शारदा पाण्डुलिपि-ग्रन्थों के माध्यम के
𑆄𑆣𑆳𑆫 𑆥𑆫 /𑆇/ 𑆍𑆮𑆁 /𑆈/ 𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳𑆃𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆾𑆓 𑆩𑆼𑆁 —
आधार पर /उ/ एवं /ऊ/ मात्राओं के प्रयोग में
𑆮𑆽𑆑𑆬𑇀𑆥𑆴𑆑 𑆫𑆷𑆥 𑆥𑆳𑆁𑆖 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆫 𑆑𑆼 𑆇𑆥𑆬𑆧𑇀𑆣 𑆲𑆾𑆠𑆼 𑆲𑆼𑆁:—
वैकल्पिक रूप पाँच प्रकार के उपलब्ध होते हैं:—

/उ/ (1)

𑆇𑆠𑇀𑆥𑆬 (उत्पल) [illegible] ([illegible]) 𑆇𑆢𑆫 (उदर)

𑆇𑆢𑇀𑆨𑆛 (उद्भट) 𑆇𑆢𑆑 (उदक) 𑆇𑆥𑆳𑆪 (उपाय)

/उ/ (2)

𑆑𑆶𑆩𑆳𑆫 (कुमार) 𑆑𑆶𑆤𑇀𑆠𑆬 (कुन्तल) 𑆑𑆶𑆩𑆳𑆫𑆵 (कुमारी)

𑆑𑆶𑆧𑆼𑆫 (कुबेर) 𑆑𑆶𑆠𑆱 (कुतस) 𑆑𑆶𑆫𑆱 (कुरस)

/উ/ (৩)

ਰੁਕ੍ਸ਼ (রুক্ষ) ਰੁਗ੍ਣ (রুগ্ণ) ਰੁਚਿ (রুচি)

ਰੁਦ੍ਰ (রুদ্র) ਰੁਧਿਰ (রুধির) ਰੁਦ੍ਰਾਕ੍ਸ਼ (রুদ্রাক্ষ

/উ/ (৫) ਸਰਵਸਾਧਾਰਣ ਪ੍ਰਯੋਗ (সর্বসাধারণ প্রয়োগ:—

ਗੁਹਾ (গুহা) ਯੁਗਲ (যুগল) ਯੁਗਾਂਤ (যুগান্ত)

ਕ੍ਸ਼ੁਰ (ক্ষুর) ਧੁਰ (ধুর) ਘੁਣ (ঘুণ) ਧੁਪ (ধুপ,

ਕੁਲਿਕਾ (কুলিকা) ਤੁਸ਼੍ਟ (তুষ্ট) ਤੁਣ੍ਡਿ (তুণ্ডি

ਤੁਲਸੀ (তুলসী) ਧੁਲਾਕ (ধুলাক) ਤੁਲਾਧਾਰ (তুলাধার

ਪੁਨੀਤ (পুনীত) ਅਨੁਨਯ (অনুনয়) ਤੁਤਿ (তুতি

ਪੁਤ੍ਰ (পুত্র) ਪੁਰੋਹਿਤ (পুরোহিত) ਫੁਲ੍ਲ (ফুল্ল)

ਬੁਧਾਸ਼੍ਟਮੀ (বুধাষ্টমী) ਭੁਵਨ (ভুবন) ਮੁਕੁਟ (মুকুট,

ਯੁਗ (যুগ) ਲੁਬ੍ਧ (লুব্ধ) ਬੁਦ੍ਬੁਦ (বুদ্বুদ)

ਸ਼ੁਭ (শুভ) ਸ਼ੁਕ੍ਲ (শুক্ল) ਸ਼ੁ (শু) ਸ਼ੂਕਰ (শূকর

ਸੁਗਨ੍ਧ (সুগন্ধ) ਮ੍ਰਿਣਾਲ (মৃণাল) ਸੂਪ (সূপ,

ਹੁਙ੍ਕਾਰ (হুঙ্কার) ਹੁਤ (হুত) ਹੁਤਾਸ਼ (হুতাশ)

/उ/ (5)

श्रु (श्रु) श्रुत (श्रुत) श्रुतकीर्ति (श्रुतकीर्ति)

श्रुतश्रवस् (श्रुतश्रवस्) श्रुति (श्रुति)

श्रुतिकटु (श्रुतिकटु) श्रुतिधर (श्रुतिधर)

विशेष-सूचना :—

इसी परिपाटी के अनुसार शारदा वर्णु-
(इसी परिपाटी के अनुसार शारदा वर्णु-
लिपि के ग्रन्थों में /ऊ/ दीर्घ मात्रा के पाँच उपयोग
लिपि के ग्रन्थों में /ऊ/ दीर्घ मात्रा के पाँच उपयोग
मिलते हैं :—
मिलते हैं :—)

/ऊ/ (1)

ऊरु (ऊरु) ऊर्ज (ऊर्जा) ऊर्मिला (ऊर्मिला)

ऊषर (ऊषर) ऊष्मन् (ऊष्मन्) ऊर्ध्व (ऊर्ध्व)

ऊखल (ऊखल) ऊर्मिनी (ऊर्मिनी)

/ऊ/ (2)

कूप (कूप) कूर्म (कूर्म) कूटस्थ (कूटस्थ)

कूटोपाय (कूटोपाय) कूल (कूल) कूबर (कूबर)

कूटधर्म (कूटधर्म) कूची (कूची)

/ਊ/ (੩)

ਰੂਪਕ (रूपक) ਰੂਪ (रूप) ਰੂੜ੍ਹਿ (रूढि

ਰੂਪ੍ਯ (रूप्य) ਰੂਕ੍ਸ਼ (रूक्ष) ਰੂਸ਼ (रूष

/ਊ/ (੫) (ਸਰਬ ਸਾਧਾਰਣ ਪ੍ਰਯੋਗ (सर्व साधारण प्रयोग

ਗੂੜ੍ਹਪਥ (गूढपथ) ਗੂਧ (गूध

ਗੂਰ (गूर) ਘੂਰ (घूर) ਘੂਰ੍ਣ (घूर्ण)

ਚੂੜ (चूड) ਚੂੜਾ (चूडा) ਜੁਹੂ (जुहू)

ਜੂਤਿ (जूति) ਤੂਣੀਰ (तुणीर) ਸੰਤੂਰ (संतूर)

ਦੂਤ (दूत) ਦੂਸ਼ਣ (दूषण) ਦੂਰ (दूर)

ਧੂਪ (धूप) ਧੂਮ (धूम) ਧੂਮ੍ਰ (धूम्र)

ਨੂਤਨ (नूतन) ਨੂਨਮ((नूनम्) ਨੂਪੁਰ (नूपुर

ਪੂਤ (पूत) ਪੂਜ੍ਯ (पूज्य) ਪੂਰਵ (पूर्व)

ਭੂਗੋਲ (भूगोल) ਭੂਗੋਲ (भूगोल) ਭੂਤ (भूत

ਮੂੜ੍ਹ (मूढ) ਮੂਲਕ (मूलक) ਮੂਸ਼ਕ (मूषक

ਯੂਪ (यूप) ਯੂਤਿ (यूति) ਯੂਥ (यूथ) ਯੂਕ (यू

[illegible] (लूम) [illegible] (लूता) [illegible] (लून) [illegible] (लूस)

[illegible] (लुब्धु) [illegible] (शूकल) [illegible] (शूद्र)

[illegible] (शून्य) [illegible] (शूर) [illegible] (शूर्प)

[illegible] (षू) [illegible] (सूक्ष्म) [illegible] (सूत) [illegible] (सूद)

[illegible] (आहूत) [illegible] (हूति)

ऊ/(ऽ)

[illegible] (हूयताम्) [illegible] (क्षूहि) [illegible] (क्षूर)

[illegible] (भ्रूलता) [illegible] (भ्रूमध्ये) [illegible] (भ्रू)

[illegible] (भ्रूण) [illegible] (भ्रूक्षेप) [illegible] : भ्रूभङ्ग

[illegible] (शुश्रूषा) [illegible] (शत्रूणाम्)

/[illegible]/ ([illegible]) {ऋ}

[illegible] (ऋण) [illegible] (ऋक्वण) [illegible] (ऋयवण)

[illegible] (धृति) [illegible] (हृष) [illegible] (प्रकृति)

[illegible] (मृग) [illegible] (गृध्र) [illegible] (तृण)

[illegible] (घृत) [illegible] (हृत) [illegible] (जृम्भ) [illegible] (वृक्ष)

[illegible] (हृद) [illegible] (शृङ्ग) [illegible] (शृङ्गार)

[illegible] (वृषभ) [illegible] (मृणाल) [illegible] (सृष्टि)

[illegible] (तृतीय) [illegible] (हृदय) [illegible] (शृङ्ग)

[illegible] :

(विशेषसूचना) [illegible]

अब व्यावहारिक भाषा में /ऌ/

तथा /ऌ/ (ऌ) एवं /ॡ/ (ॡ) का भाषिक

प्रयोग उपेक्षित हो चुका है। अतः साक्ष्य प्रस्तुत

करना आवश्यक नहीं बनता है)

/[illegible]/ (ए)

[illegible] (एक) [illegible] (एकल)

[illegible] (एकादश) [illegible] (एकान्तवास)

[illegible] (एकलव्य) [illegible] (एकपदी)

[illegible] (केशव) [illegible] (केतकी)

[illegible] (तैल) [illegible] (तेजस्)

ਚੇਤਨਾ (चेतना) ਮੇਲਕ (मेलक) ਧੇਨੁ (धेनु)

ਕੇਂਦ੍ਰ (केन्द्र) ਭੇਦ (भेद) ਮੇਘ (मेघ) ਦ੍ਵੈ (द्वैध) (द्वाई)

ਏਕਾਕਿਨ (एकाकिन) - ਏਕਾਂਤੁ (एकान्त) एकायन(एक

/ਐ/ ਐਂਦ੍ਰ (ऐन्द्र) ਐਸ਼੍ਵਰ (ऐश्वर्य) ਕੈਲਾਸ (कैलाश)

ਗੈਰਿਕ (गैरिक) ਚੈਤਨ੍ਯ (चैतन्य) ਮੈਤ੍ਰੇਯ (मैत्रेय)

ਦੈਵ (दैव) ਧੈਵਤ (धैवत) ਨੈਵੇਦ੍ਯ (नैवेद्य)

ਸ਼ੈਲ (शैल) ਮੈਕਤ (मैक्त) ਹੈਮੀ (हैमी)

ਦੈਨਿਕ (दैनिक) ਤ੍ਰੈਲੋਕ (त्रैलोक) ਦੈਵੀ (दैवी)

ਐਰਾਵਤ (ऐरावत) ਐਹਿਕ (ऐहिक) ਐਸ਼ਾਨੀ (ऐशानी)

/ਔ/ (ੌ)

ਔਜਸ (ओज) ਔਰ, (और) (ओरस) ਔਸ਼ਧਿ (औषधि)

ਕੋਕਿਲ (कोकिल) ਗੋਧਨ (गोधन) ਗੋਕੁਲ (गोकुल)

ਤੋਰਣ (तोरण) ਪੋਸ਼ਿਤ (पोषित) ਘੋਰ (घोर)

ਚੋਲ (चोल) ਧੋਰਣ (धोरण) ਜੋਧਾ (जोधा) (monophthong)

ਪੋਤ (पोत) ਬੋਧ (बोध) ਮੋਦਕ (मोदक)

/ਓ/ (ੋ) ਸ੍ਵਰ /ਓ/

औरस (औरस) औसिल (औसिल) कौल (कौल)

मौन (मौन) गौरव (गौरव) औदा (औदा

गौतम (गौतम) मौल (मौल) सौर (सौर)

कौरव (कौरव) यौगिक (यौगिक) रौद्र (रौद्र

औषध (औषध) औपचारिक (औपचारिक)

/अं/+ अः: कं, तं, रामं, अजं, मयूरं,

श्रीरामः (श्रीरामः) श्रीकृष्णः (श्रीकृष्णः)

श्रीगौतमः (श्रीगौतमः) श्रीनानकः (श्रीनानक

श्रीअभिनवगुप्तः (श्रीअभिनवगुप्तः) अश्वः (अश्वः

नरः (नरः) मयूरः (मयूरः) मानवः (मानव

/क/ वर्ण में संलग्न स्वर-मात्राओं का प्रयोग:—
((क) वर्ण से संलग्न स्वर — मात्राओं का प्रयोग:—)

क (क), का (का), कि (कि) की (की) कु (कु)

कू (कू) "OR > क्रु" (कृ) कृ (कृ) कॄ (कॄ)
([illegible])

के (के) कै (कै) को (को) कौ (कौ)

कं (कं) कः (कः)

विशेष-सूचना :—
(विशेष - सूचना)

शारदा लिपि की प्रकृति में /उ, ऊ, ऋ/
मात्राओं का स्वरूप देवनागरी लिपि से भिन्न है :—

I. देवनागरी (देवनागरी) :— कु, कू, कृ

II. शारदा (शारदा) :— [illegible], [illegible], [illegible]

III. शारदा (शारदा) :— क + र = [illegible] (क + र = क्र)

(एक ही अनुच्छेद में समस्त मात्राओं
का वाक्य प्रयोग :—

(इदानीं अस्मिन् गृहे न कोऽपि

निवसति। सम्प्रति दैवयोगेन अत्र गृहकर्तुः कोशेन
गृहस्य समीपे जलपूरित-कूपोऽपि अस्ति। अद्वैत
कुटीरे ईशानस्य कुसुममन्दिरमपि अस्ति।)

नियम-
संख्या, (1)

शारदा - लिपि की प्रकृति में जब
अक्ष — हलन्त /र/ के पश्च में मूर्धन्य /ण/
आता है, तो एक नये आकार का संयुक्त-अक्षर —

उठर का शुरु है । यथा :- / ग + ण / = "ळ" । (णे
(उभर कर आता है । यथा :- / र + ण / = र्ण, शारणा > ळ)

विशेषित उदाकरण :—
(विश्लेष उदाहरण)

(क) करण > कळ (कर्ण)

(ख) वरण > वळ (वर्ण)

सामान्य बोध के लिए अभ्यास- प्रक्रिया :—
(सामान्य बोध के लिए अभ्यास प्रक्रिया)

धळ (पर्ण) शीळ (जीर्ण) शीळ (शीर्ण) घूळ (घूर्ण)

पूळ (चूर्ण) चूळ (चूर्णी) कळी (कर्णी) तीळ (तीर्ण)

कळाटक (कर्णाटक) कळिकार (कर्णिकार) तार्ळि (तार्णि,

कळक: (कर्णक:) कळिल (कर्णिल) निळय: (निर्णय

सुपळ (सुपर्ण) कळकळि (कर्णकर्णि) ताळमय (तार्णय

पळल (पर्णल) तूळमय (तूर्णमय) पूळिमा (पूर्णिमा)

निळायक (निर्णायक) धळस (धर्णस) अळव (अर्णव,
(Durable Sthm)

कळम (कर्णम) कळपाली (कर्णपाली) कळिक (कर्णि

वळ (वर्ण) वळक (वर्णक) वळतूलि (वर्णतूलि

विशेष-सूचना :—
(विशेष - सूचना)

नियम - संख्या (2) शारदा - लिपि की प्रकृति में उस की

अग्र — हलन्त /र/ के पश्च में /य/ वर्ण आता है, तो एक नये आकार का संयुक्त-व्यञ्जन उभर कर आता है। यथा :- /र्+य/ = र्य (र्य)

निम्नलिखित उदाहरण :—

(अ) कार्य > कार्य (कार्य) (कारय)

(आ) वर्य > वर्य (वर्य) (वरय)

शारदा रेफ के लिये अनुक्रम-प्रक्रिया :—

चर्य (चर्य) आर्य (आर्य) पर्य (पर्य) और्य (और्य)

भार्य (भार्य) धैर्य (धैर्य) पर्युपासते (पर्युपासते)

निर्योग: (निर्योग:) पर्याय (पर्याय) पर्याकुल (पर्याकुल)

पर्यङ्क (पर्यङ्क) पर्यट (पर्यट Roam) पर्याप्त (पर्याप्त)

धौर्यम (धौर्यम, दुलकी चाल (Trot)) मर्यादा (मर्यादा) मौर्य (मौर्य)

धार्य (धार्य /Bearable/) मर्यक: (मर्यक: (उत्तम)) धुर्यता (धुर्यता Leadership)

कालवीर्य (कालवीर्य) निर्याण (निर्याण (हाथी के आँख का कोना)) निर्यातन

(निर्यातन वैरशुद्धि) निर्यूह (निर्यूह (चोटी)) सूर्य (सूर्य) पूर्य (पूर्य प्रतीत)

नियम-संख्या ③

शारदा - लिपि की प्रकृति में उक्त
की भाग - हलन्त /र/ के पक्ष में /व/ वर्ण
आता है, जो एक नये आकार का संयुक्त-अक्षर
उभर कर आता है। यथा :- /र + व/ = र्व (र्व)

निर्लेखित उदाहरण :—
(निर्लेखित-उदाहरण)

(अ) सर्व > सर्व (सर्व) [सर्व > सर्व]
(आ) गर्व > गर्व (गर्व) [गर्व > गर्व]

सामान्य बोध के लिये अभ्यास-प्रक्रिया :—
(सामान्य बोध के लिए अभ्यास — प्रक्रिया)

गर्वितः (गर्वित) कार्वाक (कार्वाक) चर्वित (चर्वित

उर्व (उर्व) पूर्व (पूर्व) दुर्वलि (दुर्वलि) पूर्वक (पूर्वक

निर्वाह (निर्वाह) निर्वाण (निर्वाण) निर्वेद (निर्वेद

पर्वत (पर्वत) पर्व (पर्व) निर्वासित (निर्वासित)

निर्वाचनं (निर्वाचनं) पूर्वाभ्यास (पूर्वाभ्यास) पर्वत (पर्व

दर्वि (दर्वि) दुर्व (दुर्व) सर्व (सर्व) सर्वी (सर्वी

सर्व (सर्व) वर्वीक (वर्वीक) चतुर्वर्ग (चतुर्वर्ग)

चातुर्वर्ण (चातुर्वर्ण) चतुर्विंश (चतुर्विंश) दुर्वज (दुर्वज)

(सौवीर) (गरुड) (निर्वाण)

(सर्व) (सर्वत्र) (सर्वदा) (सर्वाणि)

(विशेष - सूचना) :—

नियम-संख्या (4) (शारदा - लिपि की प्रकृति में जब
भी अग्र - हलन्त / र / वर्ण के पश्चात् में —
/ ख, ग, च, ज, थ, श / इन छः वर्णों में से
कोई भी वर्ण आता है, तो हलन्त / र / वर्ण
शारदा-लिपि में लिखा नहीं जाता है। केवल इस स्थान को
रिक्त अथवा खाली रखा जाता है)

(विश्लेषित उदाहरण) :—

I. (ख) — अर्(ख → अख (अर्ख)

II. (ग) — अर्(ग → अग (अर्ग)

III. (च) — अर्(च → अच (अर्च)

IV. (ज) — अर्(ज → अज (अर्ज) (मार्जार)

V. (थ) — अर्(थ → अथ (अर्थ)

VI. (श) — अर्(श → अश (अर्श)

(ਕ) ਸਾਮਾਨ੍ਯ ਬੋਧ ਕੇ ਲਿਏ ਅਭ੍ਯਾਸ-ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਯਾ :—
(सामान्य बोध के लिए अभ्यास – प्रक्रिया)

/ਰ+ਖ/ (र+ख)

ਸਰ੍ਖ (सर्ख) ਗਰ੍ਖ (गर्ख) ਤਰ੍ਖ (तर्ख) ਅਰ੍ਖਲ (अर्खल)

ਕਿਰ੍ਖਤਿ (किर्खति) ਲਰ੍ਖਤਿ (लर्खति) ਸਰ੍ਖਤਿ (सर्खति)

ਕਰ੍ਖਟ: (कर्खट:) ਚਰ੍ਖਟ (चर्खट) ਤਰ੍ਖ (तर्ख)

/ਰ+ਗ/ (र+ग)

(ਖ) ਸਰ੍ਗ (सर्ग) ਸਰ੍ਗ (सर्ग) ਗਰ੍ਗਿ (गर्गि) ਕਰ੍ਗ (कर्ग)
ਦੁਰ੍ਗ (दुर्ग) ਦੁਰ੍ਗਤਿ (दुर्गति) ਦੁਰ੍ਗਾਦੇਵੀ (दुर्गादेवी)
ਵਰ੍ਗ (वर्ग) ਹਰ੍ਗ (मर्ग) ਸਾਰ੍ਗਿਤ (सार्गित)
ਨਿਰ੍ਗੁਣ (निर्गुण) ਮਾਰ੍ਗ (मार्ग) ਨਿਰ੍ਗੁਣੀ (निर्गुणी)

(ਗ) /ਰ+ਚ/ (र+च)

ਕਰ੍ਚੂਰ (कर्चूर) ਅਰ੍ਚਨਾ (अर्चना) ਕੁਰ੍ਚਿਕਾ -
(कूर्चिका) ਚਰ੍ਚਾ (चर्चा) ਕਰ੍ਚ (कर्च) ਜਾਰ੍ਚ (जर्च)
ਧੁਰ੍ਚ (धुर्च) ਪਰ੍ਚ (पर्च) ਚਰ੍ਚਕ (चर्चिका)

(ਘ) ਮੂਰ੍ਛਿਕਾ (मूर्छिका) ਅਰ੍ਚ (अर्च) ਸ਼ਾਰ੍ਦੂਰ (शार्दूर)

/ਰ੍ + ਜ/ (र् + ज)

ਅਰ੍ਜੁਨ (अर्जुन) ਅਰ੍ਜਿਤ (अर्जित) ਮਾਰ੍ਜਨ (मार्जन)

ਆਰ੍ਜਵ (आर्जव) ਮਾਰ੍ਜਾਰ (मार्जार) ਵਰ੍ਜਨੀਯਮ (वर्जनीयम्)

ਤਰ੍ਜਨਾ (तर्जना) ਗਰ੍ਜਨਮ (गर्जनम्) ਜਰ੍ਜਰ (जर्जर)

ਦੁਰ੍ਜਨ (दुर्जन) ਉਰ੍ਜਾ (ऊर्जा) ਵਰ੍ਜਕ (वर्जक)

ਵਰ੍ਜ (वर्ज) ਵਰ੍ਜਿਤ (वर्जित) ਵਰ੍ਜਨਾ (वर्जना)

(ਙ) /ਰ੍ਧ/ (र् + ध)

ਅਰ੍ਧ (अर्ध) ਅਰ੍ਧਹ (अर्धः) ਅਰ੍ਧੁਕ (अर्धुक)

ਅਰ੍ਧਚੰਦ੍ਰ (अर्धचन्द्र) ਊਰ੍ਧ੍ਵਕਾਠ (ऊर्ध्वकाष्ठ)

ਊਰ੍ਧ੍ਵ (ऊर्ध्व) ਊਰ੍ਧ੍ਵਬਾਹੁ (ऊर्ध्वबाहु) ਊਰ੍ਧ੍ਵਪੁੰਡ੍ਰ – (ऊर्ध्वपुण्ड्र) ਊਰ੍ਧ੍ਵਰੇਤਾ (ऊर्ध्वरेता)

(ਚ) /ਰ੍ + ਸ਼/ (र् + श)

ਦਾਰ੍ਸ਼ (दार्श) ਦਰ੍ਸ਼ਨ (दर्शन) ਦਾਰ੍ਸ਼ਨਿਕ (दार्शनिक)

ਪਾਰ੍ਸ਼ੁਕ (पार्शुक) ਪਾਰ੍ਸ਼ਿਕ (पार्शिक) ਅਰ੍ਸ਼ (अर्श)

ਕਰ੍ਸ਼ਨ (कर्शन) ਮਰ੍ਸ਼ਨ (मर्शन) ਦਰ੍ਸ਼ਨੀਯ (दर्शनीय)

ਵਿਕਰ੍ਸ਼ (विकर्श) ਦਰ੍ਸ਼ਕ (दर्शक) ਅਰ੍ਧਕਾਸ਼ੂੰ (अर्धकर्षी)

(अदर्शन का पुनः अभ्यास

1. (ख) > (अरवि) 2. (ग) > वर्ग ; 3. (स) > अर्घ)

4. (ज) > पर्जन्य ; 5. (घ) > अर्घ, 6. (श) > विमर्श

अक्षर - सूचना :—

शारदा-लिपि की लेखन प्रकृति में मध्यस्थ

हलन्त /र/ वर्ण प्रायः पश्चिम वर्ण के आरम्भ में

शीर्षस्थ पर अंकित होता है। वर्णों की गणना

इस प्रकार से है :—

(क, घ, ङ, ट, ठ, ड, ढ, त, द, प, फ, ब,

भ, म, ल, ष, स, ह, (18)

→ र्त्त > र्त

(अर्क, दीर्घ, कार्ङ, अर्ट, मर्ठ, आर्ड, दर्ढ,

अर्त, हर्द, अर्प, अर्फ, गर्भ, कूर्म,

कौलिर्ड, हर्ष, कर्म,

नियम-संख्या (6)

(शारदा-लिपि की प्रकृति में जब भी अग्र-हलन्त /र/ के पक्ष में /थ/ वर्ण आता है, तो एक नये ओंकार का संयुक्त-व्यंजन उभर कर आता है। यथा:- /र्+थ/ =/र्थ/ (र्थ)

(निम्नलिखित उदाहरण)

(पार्थ) (स्वार्थ) (सार्थ) (तीर्थ)

(तीर्थंकर) (प्रार्थना)

(कार्यार्थम) (समर्थ) (अर्थ)

(संज्ञार्थम) (सिद्धार्थ)

(पुरुषार्थ) (कामार्थ) (स्वार्थ)

(अर्थात्) (अर्थं) (अर्थाय)

नियम-संख्या (7)

"(शारदा-लिपि की प्रकृति में जब भी अग्र-हलन्त /स/ वर्ण के पक्ष में /थ/ वर्ण आता है, तो एक नया संयुक्त-व्यंजन /स्थ/ उभर कर आता है। पर उच्चारण यथास्थित होकर बना रहता है)"

(निम्नलिखित-उदाहरण)

𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤 (स्थान) 𑆃𑆱𑇀𑆡 (अस्थ) 𑆱𑇀𑆡𑆳𑆮𑆫 (स्थावर)

𑆱𑇀𑆡𑆳𑆥𑆪 (स्थापय) 𑆃𑆮𑆱𑇀𑆡 (अवस्थ) 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆡𑆳𑆥𑆴𑆠 (संस्थापित)

𑆮𑆴𑆱𑇀𑆡𑆳𑆥𑆴𑆠 (विस्थापित) 𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤𑆳𑆣𑆵𑆯 (स्थानाधीश)

𑆇𑆥𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤 (उपस्थान) 𑆱𑇀𑆡𑆽𑆫𑇀𑆪 (स्थैर्य) {र्+य=द्व}

𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫 (स्थानेश्वर) 𑆥𑇀𑆫𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤 (प्रस्थान)

𑆃𑆱𑇀𑆮𑆱𑇀𑆡 (अस्वस्थ) 𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆴 (स्थिति)

𑆱𑇀𑆡𑆷𑆬 (स्थूल) 𑆇𑆥𑆱𑇀𑆡 (उपस्थ)

नियम- संख्या (8)

𑆮𑆴𑆯𑆼𑆰 𑆱𑆷𑆖𑆤𑆳:-

𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆘𑆧 𑆡𑆵 /𑆡/-
(शारदा लिपि में जब थी (थ) -

𑆮𑆫𑇀𑆟 𑆑𑆼 𑆃𑆤𑇀𑆠 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆬𑆤𑇀𑆠 /𑆠𑇀, 𑆤𑇀, 𑆫𑇀/ 𑆑𑆳
वर्ण के अन्त में हलन्त (त्, न्, र्) का

𑆄𑆓𑆩𑆤 𑆲𑆾𑆠𑆳 𑆲𑆼 𑆠𑆾 𑆍𑆑 𑆤𑆪𑆼 𑆄𑆑𑆳𑆫 𑆑𑆳 —
आगमन होता है तो एक नये आकार का

𑆱𑆁𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠-𑆫𑆷𑆥 𑆇𑆨𑆫 𑆑𑆫 𑆄𑆠𑆳 𑆲𑆼:-
संयुक्त - रूप उभर कर आता है)

𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩𑆠𑆂 𑆲𑆬𑆤𑇀𑆠 / 𑆠𑇀 / 𑆑𑆳 𑆄𑆑𑆳𑆫:—

ਅਸ੍ਥ: (अष्टस्य) ਅਸ੍ਥਕ (अष्टस्यक)

ਅਸ੍ਥਨ੍ (अष्टस्थन्) ਅਸ੍ਥ (अष्टस्था)

ਅਸ੍ਥਿਲ (अष्टस्थिल) ਅਸ੍ਥ (अष्टस्य)

ਹਲੰਤ /੍/ ਕਾ ਪ੍ਰਯੋਗ :—
(हलन्त (न्) का प्रयोग

ਕਥ (कथा) ਦਿਵ੍ਯ-ਕਥ (दिव्य-कथा)

ਸੁਕਥ (सुकथा) ਮਲਿਨ ਕਥ (मलिन कथा)

ਗ੍ਰਥ (ग्रन्थ) ਗ੍ਰਥਨਮ੍ (ग्रथनम्)

ਧਰ੍ਮਗ੍ਰਥ (धर्मग्रन्थ) ਗ੍ਰਥਿਲ (ग्रथिल)

ਮਥਰ (मथर) ਮਥਿਨ੍ (मथिन्)

" ਨਿਯਮ-ਸੰਖਿਆ 6 ਮੇਂ ਪ੍ਰਯੁਕਤ: ਟਿੱਪਣੀ

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ :- ਹਲੰਤ /੍/ ਉਪਰ ਪੈਰ ਕੇ /ਥ/ ਕਾ
ਵਿਵਰਣ ਪੰਨਾ 22 ਪਰ ਪ੍ਰਯੁਕਤ: ਕੀ
ਉਸਕਾ ਹੈ ਯਥਾ:—
੍ + ਥ = ਪਾਥ (ਪਾਥ
ਸਥ (ਸਥ

[illegible] (मथ) [illegible] (मृदु-मथन)

[illegible] (मथना) [illegible] (आत्ममथन)

[illegible]
(प्रस्तुत प्रयास में यह कहना आवश्यक
[illegible]
बनता है कि ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपि के उपरान्त
[illegible]
शारदा लिपि का स्थान लिपि-विकास में प्राचीनतम
[illegible]
प्रतिष्ठित रहा है। उत्तरोत्तर काल-खण्डों में
[illegible]
संस्कार और संशोधन सही-दिशा में न होने के कारण
[illegible]
जटिलता का आना स्वाभाविक हुआ है। अतः
[illegible]
जटिलता का स्वरूप प्रस्तुत करना आवश्यक
[illegible]
बनता है। अन्यथा शारदा लिपि सीखने वाला व्यक्ति
[illegible]
विभ्रान्त भी हो सकता है)

(क) "/ [illegible] + [illegible] / = / [illegible] /"

[illegible] (गोविन्द्र) [illegible] (द्रोण) [illegible] (द्रुपद)

[illegible] (द्रुम) [illegible] (भद्र) [illegible] (द्रावे)

ਦ੍ਰੋਹ (द्रोह) ਸ਼ੂਦ੍ਰ (शूद्र) ਦ੍ਰਵ੍ਯ (द्रव्य)

ਸੌਮਦ੍ਰ (सौमद्र) ਸੁਰੇਂਦ੍ਰ (सुरेन्द्र) ਸਮੁਦ੍ਰ (समुद्र)

ਮ੍ਰਿਗੇਂਦ੍ਰ (मृगेन्द्र) ਤਲੇਂਦ੍ਰ (तलेन्द्र) ਕੇਂਦ੍ਰ (केन्द्र)

(ਘ) "/ ਦ + ਧ / = / ਦ੍ਧ /
(द + ध) = (द्ध)

ਸਮ੍ਰਿਦ੍ਧ (समृद्ध) ਬੁਦ੍ਧਿ (बुद्धि) ਸ਼ੁਦ੍ਧਿ (शुद्धि)
ਵ੍ਰਿਦ੍ਧਿ (वृद्धि) ਸੰਸਿਦ੍ਧੈ (संसिद्धै) ਯੋਦ੍ਧਾ (योद्धा)
ਯੋਦ੍ਧਤ੍ਵਮ (योद्धत्वम) ਸ਼੍ਰਦ੍ਧਾ (श्रद्धा) ਵਰ੍ਦ੍ਧਨ (वर्द्धन)
ਲਬ੍ਧਵਦ੍ਧ: (लब्धवद्ध:) ਸਿਦ੍ਧਪੁਰਖ: (सिद्धपुरुष:)
ਸਿਦ੍ਧਾਰ੍ਥ (सिद्धार्थ) ਸਿਦ੍ਧਿ (सिद्धि)

(ਗ) / ਸ਼ + ਟ / = / ਸ਼੍ਟ / (ष+ट)

ਵਿਸ਼ਿਸ਼੍ਟ (विशिष्ट) ਸ੍ਰਿਸ਼੍ਟਿ (सृष्टि) ਵ੍ਰਿਸ਼੍ਟਿ (वृष्टि)
ਕ੍ਰਿਸ਼੍ਟਿ (कृष्टि) ਵ੍ਰਿਸ਼੍ਟਿ (वृष्टि) ਦ੍ਰਿਸ਼੍ਟਿ (दृष्टि)
ਪੁਸ਼੍ਟਿ (पुष्टि) ਦੁਸ਼੍ਟ (दुष्ट) ਧਨਿਸ਼੍ਠਾ (धनिष्ठा)

कनिष्ठा (कनिष्ठा) श्रेष्ठ (श्रेष्ठ) ज्येष्ठ (ज्येष्ठ)

ह्रिष्ट (ह्रिष्ट) पुष्ट (पुष्ट) सृष्टि (सृष्टि)

शारदा लिपि के संयुक्त-व्यञ्जन परिवार का परिचय :—
(शारदा लिपि के संयुक्त-व्यञ्जन परिवार का परिचय)

/क/

क्क (क्क), क्ख (क्ख), क्ड (क्ड), क्व (क्व),
(क्ल) क्ण (क्ण), क्त (क्त), क्त्य (क्त्य), क्तू (क्तू
क्त्र्य (क्त्र्य), क्त्र (क्त्र), क्थ्य (क्थ्य) क्थ्य (क्थ्य
क्न (क्न), क्न्य (क्न्य), क्य (क्य), क्म (क्म)
क्र्य (क्र्य), क्र (क्र) क्र्य (क्र्य), क्ल (क्ल)
क्व (क्व) क्व्य (क्व्य)

/क्ष/

क्ष्ण (क्ष्ण), क्ष्म (क्ष्म), क्ष्य (क्ष्य)

/ख/

ख्य (ख्य), ख्व (ख्व), प्रख्यात (प्रख्यात)
विख्यात (विख्यात), ख्याति (ख्याति)

/𑒑/

𑒑𑓂𑒝 (ग्ण), 𑒑𑓂𑒠 (ग्द) 𑒑𑓂𑒡 (ग्ध) 𑒑𑓂𑒢 (ग्न)

𑒑𑓂𑒥 (ग्ब), 𑒑𑓂𑒧 (ग्म) 𑒑𑓂𑒨 (ग्य) 𑒑𑓂𑒨𑒳 (ग्यु)

𑒑𑓂𑒫 (ग्व) 𑒑𑓂𑒪𑒰 (ग्ला) 𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟 (ग्रन्थ)

/𑒒/

𑒒𑓂𑒢 (घ्न), 𑒒𑓂𑒢𑓂𑒨 (घ्न्य) 𑒒𑓂𑒧 (घ्म) 𑒒𑓂𑒨 (घ्य)

𑒒𑓂𑒩 (घ्र) 𑒒𑒳 (घु) 𑒒𑒴 (घू) 𑒒𑒼 (घो)

/𑒓/

𑒓𑓂𑒏 (ङ्क), 𑒓𑓂𑒏𑒳 (ङ्कु) 𑒓𑓂𑒏𑓂𑒨 (ङ्क्य) 𑒓𑓂𑒏𑒾 (ङ्कौ)

𑒓𑓂𑒐𑓂𑒨 (ङ्ख्य), 𑒓𑓂𑒐 (ङ्ख) 𑒓𑓂𑒑𑓂𑒨 (ङ्ग्य) 𑒓𑓂𑒑 (ङ्ग)

𑒓𑓂𑒒𑓂𑒨 (ङ्घ्य), 𑒓𑓂𑒒 (ङ्घ), 𑒓𑓂𑒒𑓂𑒩𑓂𑒨 (ङ्घ्र्य) 𑒓𑓂𑒒𑓂𑒩 (ङ्घ्र)

/𑒔/

𑒔𑓂𑒔 (च्च), 𑒔𑓂𑒕 (च्छ) 𑒔𑓂𑒕𑓂𑒩 (च्छ्र) 𑒔𑓂𑒧 (च्म)

𑒔𑓂𑒩 (च्र) 𑒔𑓂𑒫 (च्व) 𑒔𑓂𑒕𑓂𑒫 (च्छ्व) 𑒔𑓂𑒨 (च्य)

/𑒕/

𑒕𑓂𑒩 (छ्र) 𑒕𑒱𑒢𑓂𑒢 (छिन्न) 𑒕𑓂𑒫 (छ्व) 𑒕𑓂𑒨 (छ्य)

/𑒖/+/𑒘/+/𑒖𑓂𑒘/ (ज्ञ + ज्ञा)

𑒖𑓂𑒘𑒰 (ज्ञा), 𑒖𑓂𑒘𑒿 (ज्ञ), 𑒖𑓂𑒧 (ज्म), 𑒖𑓂𑒩 (ज्र) 𑒖𑓂𑒨 (ज्य), 𑒖𑓂𑒫 (ज्व) एवं स्वल्प (स्वल्प)

[illegible] (ज्ञ) "धर्" > [illegible] (ज्ञा) [illegible] (ज्ञय) [illegible] -
(ज्ञय) :– (आधुनिकरण)
(क) [illegible] (यज्ञ) (ख) [illegible] (आज्ञा)

/क/ [illegible] (क्त) [illegible] (क्त्र) यथा:- [illegible] (क्षि

/ट/ [illegible] (ट्ट) [illegible] (ट्ठ) [illegible] (ट्य) [illegible] (ट्य
[illegible] (टि) [illegible] (टु) [illegible] (टू) [illegible] [illegible] (टा

/ठ/ [illegible] (ठा) [illegible] (ठ्र) [illegible] (ठि) [illegible] (ठु) [illegible] (ठ्य

/ड/ [illegible] (ड्र) [illegible] (ड्ड) [illegible] (ड्य) [illegible] (ड्र)
[illegible] (ड्र) [illegible] (ड्ड) [illegible] (ड्ड) [illegible] (ड्म)

/ढ/ [illegible] (ढा) [illegible] (ढु) [illegible] (ढ्य) [illegible] (ढ्र)
[illegible] (ढे) [illegible] (ढौ) [illegible] [illegible] (ढुण्ढ)

/ण/

ण्ह (ण्ह), ण्ठ (ण्ठ), ण्ड्य (ण्ड्य) ण्ड (ण्ड)
ण्ड्र (ण्ड्र) ण्ढ (ण्ढ) ण्ण (ण्ण) णो (णो)
णौ (णौ) ण्म (ण्म) ण्य (ण्य) ण्व (ण्व)

/त/

त्क (त्क) त्क्र (त्क्र) त्त (त्त) त्तृ (त्तृ)
त्त्य (त्त्य) त्त्व (त्त्व) त्थ (त्थ) त्न (त्न)
त्न्य (त्न्य) त्स्य (त्स्य) त्प (त्प) त्प्र (त्प्र)
त्म (त्म) त्म्य (त्म्य) त्य (त्य) त्व (त्व)
त्स (त्स) त्स्र (त्स्र) त्स्थ्य (त्स्थ्य) त्स्य (त्स्य)
थ्न (थ्न) थ्य (थ्य) त्र्य (त्र्य) त्रि (त्रि)

/द/

द्ग (द्ग), द्घ (द्घ) द्द (द्द) द्द्य (द्द्य)
द्ध्य (द्ध्य) द्ब (द्ब) द्भ (द्भ) द्भ्र (द्भ्र)
द्य (द्य), द्र (द्र) द्व (द्व)

/ध/

ध्न (ध्न) ध्न्य (ध्न्य), ध्म (ध्म) ध्य (ध्य)

ष्ट (ष्ठ) ष्टू (ज्ञ) ष्ट्र (ह्व)

/न/

क (न्क) त (न्त) त (न्त्य) द (न्द्र)

थ (न्थ) द्र (न्द्र) न (न्न) प (न्प)

ब (न्ब) फ (न्फ) म (न्म) ड (न्ड)

ध (न्ध) र (न्र) नक्तन (नक्त्न)

क ब्द (कान्दर्द), स ब्द (सन्दर्प)

/प/

प्र (प्र) प्त्य (प्त्य) प्र (प्र) प्प (प्प) प्म (प्म)

प्य (प्य) प्त्र (प्त्र) प्ल (प्ल) प्व (प्व) प्स (प्स)

प्स्व (प्स्व) पा (पा) पी (पी) प्लुत (प्लुत)

/फ/

स्फार, (स्फार) स्फट, (स्फट) स्फ (स्फ)

स्फरण, (स्फरण) स्फुटी (स्फुटी)

स्फीत, (स्फीत) स्फूर्जक (स्फूर्जक)

/ब/

ब्घ (ब्घ) ब्ज (ब्ज) ब्द (ब्द) ब्ध (ब्ध)

𑒥𑓂𑒥 (ब्ब) 𑒥𑓂𑒦 (ब्भ) 𑒥𑓂𑒦𑓂𑒨 (ब्भ्य) 𑒥𑓂𑒨 (ब्य)
𑒥𑓂𑒩 (ब्र) 𑒥𑓂𑒪 (ब्ल)

/भ/

𑒦𑓂𑒢 (भ्न) 𑒦𑓂𑒨 (भ्य) 𑒦𑓂𑒩 (भ्र) 𑒦𑓂𑒫 (भ्व)
𑒦𑓂𑒩𑒳 (भ्रु) 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 (अभ्यास) 𑒦𑓂𑒩𑒭𑓂𑒙 (भ्रष्ट)

/म/

𑒧𑓂𑒢 (म्न) 𑒧𑓂𑒣 (म्प) 𑒧𑓂𑒥 (म्ब) 𑒧𑓂𑒪 (म्ल)
𑒧𑓂𑒦𑓂𑒨 (म्भ्य) 𑒧𑓂𑒦 (म्भ) 𑒧𑓂𑒧 (म्म) 𑒧𑓂𑒨 (म्य)
𑒧𑓂𑒩 (म्र) 𑒧𑓂𑒩𑒳 (म्रु) 𑒧𑓂𑒫 (म्व) 𑒧𑓂𑒯 (म्ह)
𑒧𑓂𑒣 (म्प) > म्+प;

/य/

𑒨𑓂𑒨 (य्य) 𑒨𑓂𑒫 (य्व)

/र/ रुलतु (र् हलन्त)

𑒩𑓂𑒏 (र्क), 𑒩𑓂𑒐 (र्ख), 𑒩𑓂𑒑 (र्ग) 𑒩𑓂𑒒 (र्घ)
𑒩𑓂𑒔 (र्च) 𑒩𑓂𑒕 (र्छ) 𑒩𑓂𑒖 (र्ज) 𑒩𑓂𑒙 (र्ट) 𑒩𑓂𑒚 (र्ठ)

ड्र (र्डि) ढ्र (र्ढि) ण्र (र्णि) त्र (र्ति) थ्र (र्थि)
द्र (र्दि) ध्र (र्धि) प्र (र्पि) फ्र (र्फि) ब्र (र्बि)
भ्र (र्भि) म्र (र्मि) य्र (र्यि) ल्र (र्लि) व्र (र्वि)
श्र (र्शि) ष्र (र्षि) स्र (र्सि) ह्र (र्हि)

/ल/

ल्ह (ल्ह) ल्प (ल्प) ल्फ (ल्फ) ल्म (ल्म)
ल्य (ल्य) ल्ल (ल्ल) ल्ह (ल्ह) ल्व (ल्व)

/व/

व्य (व्य) व्र (व्र) व्व (व्व) वा (वा)
वि (वि) व्न (व्न)

/स/

स्त (स्त) स्त्य (स्त्य) स्न (स्न) स्य (स्य)
स्र (स्र) स्त्र (स्त्र) स्थ (स्थ) स्थ (स्थ)
स्म (स्म) स्स (शश)

/ष/

ष्ट (पं. धातु लिपि-प्रयुक्त प्रयोग > ष्ट) (ष्ट)

(A) ► ष्ट्य (ष्ट्य) ष्ट्र (ष्ट्र) ष्ट्र्य (ष्ट्र्य) ष्ट्व (ष्ट्व)

(B) ► ष्ट्य (ष्ट्य) ष्ट्र (ष्ट्र) ष्ट्र्य (ष्ट्र्य) ष्ट्व (ष्ट्व)
ष्ठ (ष्ठ) ष्ठ्य (ष्ठ्य) ष्ण (ष्ण) ष्ण्य (ष्ण्य)

ष्प (ष्प) ष्प्र (ष्प्र) ( ) ष्फ (ष्फ)

ष्म (ष्म) ष्व (ष्व) ष्ट्व

/स/

स्क (स्क) स्ख (स्ख) स्त (स्त) स्त्य (स्त्य)
स्म (स्म) स्म्य (स्म्य), स्य (स्य) स्र -
(स्र) स्त्व (स्त्व) स्थ (स्थ), स्न (स्न)

स्त्य (स्त्य) स्प (स्प) स्फ (स्फ)
स्म (स्म) स्म्य ( ) स्य (स्य)
स्र (स्र) स्व (स्व) स्स (स्स) स्ह (स्ह)
(स्त्र) (स्तु)

/ह/

ह्ण (ह्ण) ह्न (ह्न) ह्म (ह्म) ह्य (ह्य)
ह्र (ह्र) ह्ल (ह्ल) ह्व (ह्व)

[illegible]
(अग्रिम अध्याय - प्रक्रिया के स्थायी स्तम्भ के रूप में अपनाकर, इस प्रस्तुत प्रयास में पुनः शारदा वर्णमाला के क्रमिक-प्रयोग के परखने का एक और प्रयास किया जा रहा है। यह प्रयास चाक्षुष - बिम्ब की ग्राह्य शक्ति के लिए आवश्यक है।

[illegible] (अकस्मात्), [illegible] (अग्रतः) [illegible] (अजस्रम्) [illegible] (अज्ञान) [illegible] (अग्रे), [illegible] (अथ) [illegible] (अत्र) [illegible] (अद्य) [illegible] (अद्भुत) [illegible] (अध्यात्म विद्या) [illegible] (अस्मिन्) [illegible] (अब्ज) [illegible] (अद्य) [illegible] (अधः) [illegible] (अधस्तात्) [illegible] (अयत्र) [illegible] (अर्घ) [illegible] (अद्रि) [illegible] (अङ्कुर) [illegible] (अङ्गना) [illegible] (अङ्गुल) [illegible] (अचिन्त्य) [illegible] (अजमोद) [अजवन] [illegible] (अजातदन्त) [illegible] "अथवा" [illegible] (अज्ञात) [illegible] (अज्ञातकुलशील)

[illegible] (अज्येष्ठ) [illegible] (अज्र) [क्षेत्र, मैदान] [illegible] - (अज्जा) [illegible] (अटवी) [illegible] (अट्टल) अ०, [illegible] (जाना, जाता है) [illegible], [illegible] (उद्यम-करना, उद्यम करता है) [illegible] (ढक्का) (विशाल पावन भक्ति) [illegible] (ढक्कन) [illegible] [illegible] (ढक्कारी) [भगवती तारा] [illegible] (अणव्य) [छोटी खेती] [illegible] (अणीयस्) [सूक्ष्म] [illegible] (अण्डाकार) [illegible] (अण्डज) [illegible] (अणो) [illegible] (अतर्कि) [illegible] (अतर्क्य) [illegible] - (अतिकृच्छ्र) [अतिकठिन] [illegible] अथवा [illegible] - (अतितीक्ष्ण या तीक्ष्ण), [illegible] (अत्र) [illegible] (अथवा)

[illegible] (- [र्+व = च, शारदा > र्(+व = च (र्व)] - (अर्थवैन्) [illegible], (अथो) [illegible] (अदर्शन्) [इस वर्ण की उपस्थिति होने पर हलन्त /र्/ लिखा नहीं जाता, मात्र रिक्त स्थान रखा जाता है] [illegible] (अदीर्घ) [illegible] (अदंष्ट्र) [illegible]

[illegible] (अद्धा) > सत्यता, [illegible] (अद्भुत) [illegible] (अद्वानि) [illegible] (अधर्म) [illegible] (अधिकार) [illegible] (अध्याय)

[illegible] (अधिकृत) [यह स्थित इसका होना चाहिए था > [illegible]
पर पाण्डुलिपियों में बहु प्रचलित रूप [illegible] (कृ) ही मिलता है

[illegible] (अबोध) [illegible] (अध्वर्यु) [र + य = द (र्य)]

[illegible] (अनक्षर:) [illegible] (अनभिदग्ध)

[illegible] (अनङ्गा) [illegible] [र + व > च (र्व)]

(अनन्यपूर्व) [illegible] (अनपेक्ष) [illegible] (अनम्र)

[illegible] (अनम्र) [illegible] (अन्याय) [illegible] (अनुवृत्ति)

[illegible] (अन्नजलम्), [illegible] (अपरपक्ष)

[illegible] (अवाल) [illegible] (अविद्या) [illegible]

(अवीक्ष्य - अभिसुन्दर) [illegible] (अबुद्धकाल) [illegible]

(अपूर्व) [र + व, परिवर्तित रूप > च] [illegible] (अपेक्षा

[illegible] (अपोढ़ / कथित) [illegible] (अप्रकाश) [illegible] (क्षति)

[illegible] (अफेन) [illegible] (अफल) [illegible] -

(अबाध) [illegible] (अबल) [illegible] (अब्ज) [illegible]

'ध' [illegible] (अब्द) [illegible] (आक्रन्दना)

[illegible] (अभूल) [illegible] (अभिमुख) [illegible]

([illegible])

ਅਭਿਬ੍ਯਾਪ੍ਤਿ (अभिव्याप्ति) ਅਭੀਸ਼੍ਟ (अभीष्ट) ਅਭੀਕ (अभीक) ਅਭ੍ਯਰ੍ਥ (अभ्यर्थ) ਅਭ੍ਯੁਤ੍ਥਾਨ (अभ्युत्थान) ਅਮਤ (अमत) ਅਮਰਾ (अमरा) ਅਮਾਵਸ੍ਯਾ (अमावस्या) ਅਮੂਲ (अमूल) ਅਮੂਰ੍ਤ (अमूर्त) ਅਮਿਤ੍ਰ (अमित्र) ਅਮੇਧਸ (अमेधस्) ਅਮੋਘ (अमोघ) ਅਮ੍ਬਰ (अम्बर) ਅਮ੍ਬਾ (अम्बा) ਅਮ੍ਬੁਧਿ (अम्बुधि) ਅਮ੍ਭਸ (अम्भस्) ਅਮ੍ਭੋਧਰ (अम्भोधर) ਅਮ੍ਰ (अम्र) ਅਮ੍ਲ (अम्ल) ਅਯਸ (अयस्) ਅਯਾਚਿਤ (अयाचित) ਅਯਿ (अयि) ਅਯੇ (अये) ਅਯੋਧ੍ਯਾ (अयोध्या) ਅਰਣ੍ਯ (अरण्य) ਅਰਾਜਕ (अराजक) ਅਰਿਸ਼੍ਟ (अरिष्ट) ਅਰੁਣ (अरुण) ਅਰੇਪਸ (अरेपस्) ਅਰ੍ਗਲ (अर्गल)

[/ग/ की उपस्थिति में हलन्त /र/ लिखा नहीं जाता पर रिक्त स्थान रखा जाता है यह क्रम "ख, ग, घ, ङ, ण, मैं" यथा:—

I. ਰ੍ਖ (र्ख), II. ਰ੍ਗ (र्ग), III. ਰ੍ਘ (र्घ), IV. ਰ੍ਙ (र्ङ), ਰ੍ਣ (र्ण), ਰ੍ਮ (र्म)

ਅਲਮ (अलम्) ਅਲਕ (अलक) ਅਲਾਬੁ (अलाबु)

ਅਲਿਪਸਾ (अलिप्सा) ਅਵਕਾਸ (अवकाश) ਅਵਟ
(अवट) (मदारी) ਅਵਛੇਦਕ (अवच्छेदक) ਅਵਡੀਲ (अवकीर्ण)
ਅਵਰੁਧ (अवरुद्ध) ਅਵਿਦਯਾ (अविद्या) ਅਵਿਸਪਸ਼ਟ
(अविस्पष्ट) ਅਵੀਚਿ (अवीचि) ਅਵਯਕਤ (अव्यक्त) ਅਸਨ
(अशन) ਅਸਾਮ੍ਹ (अश्मह) ਅਸਿਤ (अशित) ਅਸੋਧ੍ਯ
अशोध्य) ਅਸ੍ਮਕ (अश्मक) ਅਸ੍ਮਗਰਭ (अश्मगर्भ)
ਅਸ੍ਰ (अश्र) ਅਸ੍ਰਾਂਤ (अश्रान्त) ਅਸ੍ਰਿ (अश्रि)
ਅਸ੍ਰੁ (अश्रु) ਅਸ੍ਲੀਲ (अश्लील) ਅਸ੍ਵਾਖੁਰ —
(अश्वखुर) ਅਸ੍ਵਤ੍ਥ (अश्वत्थ) ਅਸ੍ਵਿਨੀਕੁਮਾਰ (अश्विनीकुमा
ਅਖਾਢ (अषाढ) ਅਸ਼ਟਕਾ (अष्टका) ਅਸ਼ਟਾਧ੍ਯਾਯੀ
(अष्टाध्यायी) ਅਸ਼ਟਾਵਕ੍ਰ (अष्टावक्र) ਅਸਕ੍ਰਿਤ(
(असकृत) ਅਸਾਧੁ (असाधु) ਅਸਿਪਤ੍ਰ (असिपत्र) (नरक)
ਅਸੁਰ (असुर) ਅਸੂਯਕ (निंदक) (असूयक) ਅਸ੍ਰਗ (असृग्
ਅਸ੍ਰੁਪਾਤ: (अस्रुपात:) [रक्तनदी या ...) ਅਸ੍ਮਿ (अस्मि
ਅਸ੍ਮਿਤ (अस्मित) ਅਜਸ੍ਰ (अजस्र) ਅਹੰਕਾਰ
(अहंकार) ਅਹਿਫੇਨ (अहिफेन) [अफीम)

(संप्रति अधोलिखित प्रकार में शारदा लिपि के उन शब्दों को उद्धृत करने का प्रयत्न किया जा रहा है, जो शब्द शारदा लिपि के लिखने और आपसी तालमेल में जटिलता प्रस्तुत करते हैं :)

(संलाधयेत्तिर ग्रयम्)

(अमृत), (अध्यात्म) (अत्र) (अद्य)

(अर्थ) (अथ) (अटवी) (अष्टौ)

(अर्जुन) (अर्ध) (अर्कि) (अर्पित)

(अर्चना) (अर्जन) (अर्धे)

(अश्वत्थ) (अश्वत्थामा) (अनाथ)

(अर्थी) (अमित्र) (अन्तर) -

(अद्या) (अतीव) (अज्ञ) (अन्यच्च)

(अमितः) (अमुत्र)

(अनुचित) (अरम्) (अलं)

(अधः) (अवेक्ष्य:) (अज्ञानतः)

(अन्यथा) (अनिशम्) (अत्र)

(ह्यथ्च - ह्वारा, ग्रामनेन)

(आत्मा) (आचार्य) (आत्मसं-
भावित) (आनन्द) (आपाद)
(आशङ्का)
(आचार्य) (आवश्यक)
(नास्तिक) (नैरात्म्यं) (विक्रान्त)
(आक्रान्त) (पर्युपासते) —
(आद्यम्) (काण्ड) (भाण्ड)
(इदम्) (इतः) (इतस्ततः)
(इदानीं) (इडा) इतस्ततः (विक्रम)
(कार्तिक) (प्रकृति) (महर्षि)
(ग्रथित) (शिखण्डी)
(पितृवन) (काङ्क्षित) (मङ्क्ष्वकौमिः)
(अवस्थित) (क्रिया) (बुद्धि)
(जीर्णानि) (बुद्धियोगं)
(बुद्ध्या) (निर्योग) (निर्द्वन्द्व) (शान्ति)
(व्यामिश्रेणेव) (आप्नोति)
(अपरिहार्ये) (विप्र) (द्विज)

[illegible] (ईप्सत्) [illegible] (इहैव) [illegible] (ईरति) (अहन) [illegible] (मीन)

[illegible] (द्रौपदी) [illegible] (समीक्ष्य) [illegible] (तूष्णी)

[illegible] (जीर्णानि) [illegible] (ब्राह्मी) [illegible] (गीतामाहु)

[illegible] (वीर्यवान) [illegible] (वीरभोग्यावसुन्धरा)

[illegible] (दीर्घ) [illegible] (श्रीनुमान्) [illegible] (कीर्तित)

[illegible] (श्रीमान्) [illegible] (क्रीडा) [illegible] (शीतोष्ण)

[illegible] (सुरीन्द्र) [illegible] (महर्षीणाम)

[illegible] (ब्रह्मर्षीणाम्) [illegible] (विलीर्ण)

[illegible] (ब्रह्मीर्थी) [illegible] (उन्नीषे) [illegible] (मोक्ष)

[illegible] (उच्चै) [illegible] (उत्तरदिशा) [illegible] (उभयतः)

[illegible] (उषा) [illegible] (बन्धु) [illegible] (बुद्धिमान्)

[illegible] (पर्युपासते) [illegible] (इन्द्रियार्थेषु)

[illegible] (त्रिपुरात्मनः) [illegible] (उद्वेत)

[illegible] (श्रीनुवत्) [illegible] (शीतोष्णसुखदुःखेषु)

[illegible] (साधुवृत्ति) [illegible] (बहुसंसारवर्तीनि)

(1) [illegible] (2) [illegible] (भूतानि भूतस्थो) [illegible] (भूतानि)

(1+2 यह दोनों रूप पाण्डुलिपियों में मिलते हैं, — [illegible] रूप / [illegible] / यहाँ।)

[illegible] (सर्वभूतेषु) [illegible] (भूतानामस्मि) —

[illegible] (धेनूनामस्मि) [illegible] [illegible] (शत्रूनां कुम्भ-

माकर:) [illegible] (कुर्लिनम्) [illegible] (कूपवाटि)

[illegible] (अनेककालाद्दूरवल्लभनेत्रं)

[illegible] (कान्तन्) [illegible] (कूपवारि) [illegible] (सूर्योदय,

[illegible] (कूप) [illegible] (कूटस्थ) [illegible] (कूर्माचल)

[illegible] (ऊर्ध्व) [illegible] (क्रूर) [illegible] (शान्न) —

[illegible] (बधून) [illegible] (मधुसूदन) [illegible] (अंशुपूर्ण

[illegible] (अरिसूदन) [illegible] (सूद्धि) [illegible] (तूष्णीं)

[illegible] (भूत्वा), [illegible] (भूत्वा) [पाण्डुलिपियोंमें दोनोंका प्रचलन है]

[illegible] (इषु) [illegible] (धातृ) [illegible] (कर्तृ) [illegible] (नेतृ

[illegible] (भर्तृ) [illegible] (श्रोतृ) [illegible] (दुहितृ) [illegible] (कृत्वा)

[illegible] (धातॄन्) [illegible] (पितॄन्) [illegible] (नप्तॄन्)

[illegible] (एकदा) [illegible] (एकत्र) [illegible] (एवम्)

[illegible] (केशव) [illegible] (विद्यते) [illegible] -

(कर्मचोदनाधिकारः) हेतु (हेतु) सर्वेषु (सर्वेषु) दूरेण (दूरेण)

दुष्कृते (दुष्कृते) निर्वेद (निर्वेद) प्रभावेन (प्रभावेन)

ब्रजेत (ब्रजेत) दुःखेषु (दुःखेषु) इन्द्रियार्थे (इन्द्रियार्थे)

यस्येन्द्रियाणि (यस्येन्द्रियाणि) रागद्वेष (रागद्वेष)

प्रकर्षोऽस्तु ते (प्रकर्षोऽस्तुते) कार्यते (कार्यते)

प्रकृतिजैः (प्रकृतिजैः) गुणैः (गुणैः) तैर्ज्ञान (तैर्ज्ञान)

प्रदायैभ्यो (प्रदायैभ्यो) वैरिणम् (वैरिणम्) तांस्तथैव –

(तांस्तथैव) कर्मैव (कर्मैव) पूर्वैरपि (पूर्वैरपि) दैव (दैव)

यज्ञेनैवोपजुह्वति (यज्ञेनैवोपजुह्वति) सांख्यैः (सांख्यैः)

केवलैः (केवलैः) तैर्जितः (तैर्जितः) छिन्नद्वैधाः (छिन्नद्वैधाः)

तस्यैव (तस्यैव) आत्मैव (आत्मैव) चैलाजिन (चैलाजिन)

तैरैकाग्र्यम् (तैरैकाग्रम्) शनैः शनैः (शनैः शनैः) –

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः (त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः) तैः (तैः)

मय्येव (मय्येव) सुखदुःख संज्ञैः (सुखदुःख संज्ञैः)

योगिनस्त्वेनं (योगिनस्त्वेनं) वेदेषु सर्वैः (वेदेषु सर्वैः)

𑆍𑆧𑇀 (𑆍३𑆧𑇀 (") 𑆍𑆏𑆂 (ओकः 'आवास') 𑆍𑆒𑆂 (ओघः-वेग)

𑆍𑆠 (ओत-"बुनाई") 𑆍𑆯𑇀𑆜𑇀𑆨 (ओष्ठ्य)(अक्षरवर्ग) 𑆍𑆣𑆯 (ओजस)

𑆍𑆖 (ओज) 𑆏𑆾𑆛𑆵𑆫 (कोटीर, लाल) 𑆏𑆾𑆯𑇀𑆜 (कोष्ठ Locked)

𑆯𑇀𑆫𑆾𑆠 (स्रोत) 𑆨𑆾𑆑𑇀𑆯𑇀𑆨𑆳𑆧𑆴 (योत्स्यामि) 𑆍𑆓𑆳𑆢𑇀 (ओगान्)

𑆇𑆩𑆨𑆾𑆂 (उभयोः) 𑆯𑆳𑆯𑇀𑆬𑆠𑆾𑇁𑆨𑆁 (शाश्वतोऽयं) 𑆥𑆶𑆫𑆳𑆟𑆾 (पुराणो)

𑆢𑆫𑆾𑇁𑆥𑆫𑆳𑆟𑆴 (नरोऽपराणि) 𑆯𑆾𑆔𑆴𑆠𑆶𑆧𑇀 (शोचितुम्)

𑆯𑆑𑇀𑆓𑆾𑇁𑆯𑇀𑆠𑆶 (सङ्गोऽस्तु) 𑆨𑆾𑆓𑆯𑇀𑆡𑆂 (योगस्थः) 𑆩𑆾𑆲𑆏𑆪𑆴𑆪𑆁-

(मोहकलिलं) 𑆧𑆢𑆾𑆓𑆠𑆳𑆢𑇀 (मनोगतान्) 𑆏𑆷𑆫𑇀𑆩𑆾𑇁𑆑𑇀𑆓𑆳𑆢𑆵𑆬-

(कूर्मोऽङ्गानीव) 𑆥𑆶𑆢𑇀𑆣𑆴𑆢𑆳𑆯𑆾 (बुद्धिनाशो) 𑆢𑆴𑆨𑆾𑆓𑆴𑆠𑆂 (नियोजितः)

𑆎𑆒𑆂 (औघ) [बाढ] 𑆎𑆓𑆳𑆯𑆧𑇀 (औजसम्) [Gold]

𑆎𑆘𑇀𑆘𑇀𑆬𑆪𑇀𑆨𑆧𑇀 (औज्ज्वल्यम्) [उज्ज्वलता] 𑆎𑆠𑆳𑆫𑇀𑆨𑆧𑇀

(औदार्यम्) [उदारता] 𑆎𑆥𑆔𑆳𑆫𑆴𑆏 (औपचारिक) 𑆎𑆥𑆯𑇀𑆡𑆳𑆢

(औपस्थान) 𑆫𑆳𑆓𑆢𑇀𑆬𑆼𑆰 (रागद्वेष) 𑆥𑆫𑆴𑆥𑆚𑇀𑆡𑆴𑆢𑆾 (परिपन्थिनौ)

𑆬𑇀𑆨𑆬𑆯𑇀𑆡𑆴𑆠𑆾 (व्यवस्थितौ) 𑆥𑇀𑆫𑆲𑇀𑆩𑆳𑆟𑆾 (ब्रह्माणौ) 𑆇𑆩𑆾

(उभौ) 𑆯𑆳𑆁𑆏𑇀𑆨𑆨𑆾𑆓𑆾 (सांख्ययोगौ) 𑆯𑆶𑆔𑆾 (शुचौ) 𑆏𑆾𑆠𑆶𑆨-

(कौन्तेय) 𑆥𑆴𑆩𑆳𑆬𑆯𑆾 (विभावसौ) 𑆏𑆿𑆧𑆳𑆫𑆁 (कौमारं) 𑆨𑆿𑆬𑆢𑆁 (यौवनं)

(शारदा लिपि के लेखन प्रवाह में शब्द-संयोजना, शब्द-खण्ड एवं वाक्य-खण्ड की जटिलता का — समाधान) :—

(अर्थ) (असद्विसुयते)

(अपक्षोद्दवं) (अव्ययम्)

(अश्वत्थं) (अद्भुत) (अध्यात्म)

(अत्यर्थितोऽस्मि) (असंख्यात)

(अटवी) (अखण्ड) (अवस्थित)

(अश्व) (अपरिहार्य) (अथ:)

(अभ्युत्थानम्) (अद्य)

(अन्तर) (असङ्ग)

(आदित्यवत्स्थानम्)

(आनन्द) (आधान) (आप)

(आचार) (गान्धार) (विद्या)

(आषाढ) (पाराशर्य)

(पाण्डव) (मुद्रा) (क्रिया)

[illegible] (उष्ट्र) [illegible] (उभय) [illegible] (उषा)

[illegible] (कुम्भक) [illegible] (क्षुरक) [illegible] (क्षुधा)

[illegible] (खुर) [illegible] (गुरु) [illegible] (घुण) [illegible]-

(चुलुपा) [illegible] (छुरण) [illegible] (जुष्ट)

[illegible] (तुलसी) [illegible] (थुत्कार) [illegible]-

(दुधित) [illegible] (धुरीण) [illegible] (नुति)

[illegible] (कूजन) [illegible] —

(गूढोत्तर) [illegible] (सूक्ष्म) [illegible] (मूल)

[illegible] (शूल) [illegible] (कूल) [illegible] (तूल)

[illegible] (पूर्ण) [illegible] (सूर्य) [illegible] (कूर्म)

[illegible] (स्तूप) [illegible] (शून्य) [illegible] –

(स्थूल) [illegible] (सूक्ष्म) [illegible] (भ्रूमध्ये)

नव सूचना:—(क) [illegible] (शून्य) (ख) [illegible] (शून्य)

[illegible] (ओघ) [illegible] (ओष्ठ) [illegible] (ओष्ठा) –

[illegible] (ओघ) [illegible] (ओषध) [illegible] (कोप)

ਸਙ੍ਯਾ (संज्ञा) ਪੁਨ੍ਯਾਣਾਮ (पुन्नागाम्)
ਕ੍ਰਿਸ਼੍ਣਾ (कृष्णा) ਪਾਰ੍ਸ਼੍ਵ (पार्श्व) ਕੁਰ੍ਯਾਤ (-
(कुर्यात्) ਸੰਖ੍ਯਾ (संख्या) ਵਾਕ੍ਯਮ (वाक्यम्)
ਸ਼੍ਰੂਰ: (शूर:) ਪਰਾਮਰ੍ਸ਼ (परामर्श) ;

ਇਤਰ (इतर) ਇਸ਼ੁ (इषु)
ਇਸ਼ (इष) ਇੱਛਾ (इच्छा) ਇਡਾ (इडा)
ਇੰਦ੍ਰਿਯ (इन्द्रिय) ਇਕ੍ਸ਼ੁ (इक्षु) ਇਸ਼੍ਟ (इष्ट)
ਗਤਿ (गति) ਮਤਿ (मति) ਕ੍ਰਿਸ਼ਿ (कृषि) —
ਵ੍ਰਿਸ਼੍ਟਿ (वृष्टि) ਨਿਯਤਿ (नियति) ਤਿਥਿ (तिथि)

ਈਰ (ईर) ਕੀਰ (कीर) ਨੀਰ (नीर)
ਈਤਿ (ईति) ਈਸ਼ਾ (ईषा) ਈਹਾ (ईहा)
ਈਸ਼ਤ (ईषत्) ਪੀਨਤਾ (पीनता) ਗੀਤਾ (गीता)
ਕੀਕਲ (कीकल) ਕੀਟ (कीट) ਨੀਚ (नीच)
ਸ਼ੀਘ੍ਰ (शीघ्र) ਮੀਨ (मीन) ਰੀਤਿ (रीति)

𑆑𑆾𑆬𑆳𑆲𑆬 (कोलाहल) 𑆠𑆾𑆑𑇀𑆰𑆟 (तोक्षण)

𑆓𑆾𑆬𑆳 (गोला) 𑆖𑆾𑆫 (चोर) 𑆗𑆾𑆫𑆟 (छोरण)

𑆓𑆾𑆣𑆵 (गोधी) 𑆣𑆾𑆫𑆟 (धोरण) 𑆠𑆾𑆫𑆟 (तोरण)

𑆔𑆾𑆰 (घोष) 𑆇𑆢𑇀𑆔𑆾𑆰 (उद्घोष) —

𑆘𑆾𑆰𑆳 (जोषा) 𑆑𑆾𑆯𑆴𑆑𑆳 (कोशिका)

𑆑𑆿𑆥𑆵𑆤 (कौपीन) 𑆐𑆢𑆳𑆫𑆴𑆑-
(औदारिक) 𑆐𑆢𑇀𑆣𑆠𑇀𑆪 (औद्धत्य) 𑆐𑆥𑆩𑇀𑆪-
(औपम्य) 𑆑𑆿𑆬 (कौल) 𑆑𑇀𑆰𑆿𑆫 (क्षौर)
𑆓𑆿𑆝𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫 (गौडेश्वर) 𑆠𑆿𑆬𑆴𑆤 (तौलिन्)
𑆣𑆿𑆠 (धौत) 𑆤𑆿 (नौ) 𑆧𑆿𑆣𑆳𑆪𑆟-
(बौधायण) 𑆑𑇀𑆫𑆿𑆁𑆖 (क्रौंच) 𑆠𑆿𑆠 (तौत)
𑆨𑆿𑆩 (भौम) 𑆪𑆿𑆮𑆤 (यौवन) 𑆩𑆿𑆤 (मौन)

𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆢𑆼𑆯𑆼 𑆩𑆶𑆱𑆬𑇀𑆩𑆳𑆂 (कश्मीरदेशे मुसल्माः)

प्रकाशम् मुक्ष विश्रान्ति अकंठावे कि कीर्ति डः -

(प्रकाशस्य आत्मविश्रान्तिः अहंभावो हि कीर्तितः।)

स्वस्वरूपे विमृष्टिः विमर्शः (स्वस्वरूपे विश्रान्ति विमर्शः)

तत्र ज्ञानं स्वतः सिद्धं क्रिया कायाश्रिता सती (तत्र ज्ञानं स्वतः सिद्धं क्रिया कायाश्रिता सती), घटो-

मयात्मना वेद्मि (घटो मयात्मना वेद्मि। कृत-

पदोऽस्मि महेशस्येच्छया। (कृतपदोऽस्मि-न्महेशस्येच्छया)। किं अपरे मृगये भवतः

पुरो। (किं अपरे मृगये भवतः पुरो)

शुभ शतानि उदितानि तवैव मे। (शुभ-शतानि उदितानि तवैव मे) तस्मात्वमे-

वं भवन्तं याकार (अस्मात्वमेवं भवन्ते याकार

न विदन्ति परं देवं विद्यारागेण रञ्जिताः।

(न विन्दन्ति परं देवं विद्यारागेण रञ्जिताः)

यतः सारमस्य जगतः सा शक्तिः मालिनी पर

(यत् सारमस्य जगतः सा शक्तिः मालिनी पर

“यः तत्र न वेद किं ऋचा करिष्यति”

(यः तत् न वेद किं ऋचा करिष्यति)

स्फुत प्रकाश रञ्जित (margin notes)

"चैतन्यमाला"

"शारदा — लिपि

का

एक व्यवस्थित

शिक्षिका"

"शोध - कर्ता :"

"डॉ॰ त्रिलोकीनाथ गंजू,

82 - हब्बू पाईन श्रीनगर

काश्मीर

मूल पाण्डुलिपि का मुद्रण - प्रकाशन लेखक के अधीन - रक्षित है"

निहित पृष्ठ संख्या ;